भगवान को नहीं जान सकते।
भगवान को जान सकते है।

जो लोग ये सोचते हैं कि भगवान को जान सकते है, वे कुछ नहीं जानते। जो लोग सोचते हैं कि भगवान को जाना नहीं जा सकता, वे सबकुछ जानते है। मतलब भगवान को कोई नही जान सकता। क्यों? इसलिए कि भगवान दिव्य है और हमारी इंद्रिय, मन, बुद्धी प्राकृत है। अब हम जानते है कि भगवान अनंत असीम शाश्वत आनंद है, जबकि हमारी इंद्रिय, मन, बुद्धी सीमित विषय ही ग्रहण कर सकती है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

आगे 'मन इंद्रियों की पहुंच से परे है। बुद्धि तक पहुंच मन से परे है। आत्मा बुद्धि की पहुंच से परे है। माया आत्मा से परे है और भगवान माया से परे है।' इस प्रकार बुद्धि भगवान तक पहुंचने में सक्षम नहीं है। और हमारे लिए ज्ञान इकट्ठा करने वाला एकमात्र उपकरण बुद्धि है। इसलिए जो कुछ बुद्धि की क्षमता से परे होगा, उसे हम नही समझ सकते। जिसका अर्थ है कि हम कभी भी भगवान के ज्ञान को प्राप्त करने में सफल नहीं हो सकते।

लेकिन अनादि काल से अनंत जीवों ने भगवान का ज्ञान प्राप्त किया है। यह कैसे संभव है? शास्त्रों का कहना है, 'केवल भगवान भगवान को देख सकते हैं। अर्थ ये कि केवल भगवान की आंखें भगवान को देख सकती हैं '। भगवान की आंख हमारी तरह माया से नही बनती। भगवान के शरीर का हरएक अंग भगवान स्वयं होते है। भगवान हरएक अंग दिव्य होता है। यानी कि भगवान के हरएक रोम में भगवान की सब शक्तियाँ विद्यमान होती

है। इसलिए श्रीकृष्ण के हरएक रोम से अनंत आनंद अनुभव में आता है। उनके भगवान में शरीर एवं शरीरी का भेद नही होता। हम लोगों का शरीर तथा आत्मा भिन्न होती है। शरीर में आत्मा रहती है। लेकिन भगवान की आत्मा और भगवान का शरीर एक होता है। उसमें भेद नही होता।

इसी तरह दिव्य कान दिव्य ईश्वर के दिव्य शब्द सुन सकते है। दिव्य नाक से भगवान की दिव्य सुगंध मिल सकती है। दिव्य त्वचा ही दिव्य भगवान को छू सकती है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

जिन लोगों ने दिव्य भगवान को देखा वो इसलिए कि लिए संभव था कि भगवान ने अपनी अकारण करूणा से कृपा कर उन्हें दिव्य बुद्धि, दिव्य मन और दिव्य शरीर, दिव्य इंद्रियों से अनुग्रहित किया था। प्राकृत इंद्रिय, मन, बुद्धी से भगवान को जानना संभव नही है। लेकिन दिव्य इंद्रिय, मन, बुद्धी से भगवान को जाना जा सकता है।

इस प्रकार
भगवान को नहीं जान सकते।
भगवान को जान सकते है।